# उच्च शिक्षा में शोध की वर्तमान स्थिति एवं प्रासंगिकता : एक समीक्षात्मक अध्ययन

Dr.Pushpa Singh

Assistant Professor

Department of Education

Kamla Arya kanya P.G.College,

Mirzapur (U.

## सारांश-

उच्च शिक्षा में शोध ज्ञान के सृजन, नवाचार, सामाजिक परिवर्तन तथा राष्ट्र के समग्र विकास का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। वर्तमान भारतीय परिदृश्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शोध की प्रकृति, पद्धतियों आवश्यकताओं ,प्राथमिकताओं आदि में तीव्र गति से परिवर्तन

हुआ है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल तकनीक, अंतर्विषयक अध्ययन तथा अन्तरराष्ट्रीय सहयोग ने शोध के नित नए अवसरों को प्रारंभ किया है। इसके साथ ही शोध की गुणवत्ता, मौलिकता, , वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता, समाजोपयोगिता, तथा शोध नैतिकता जैसी चुनौतियों से भी सामना हुआ हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च शिक्षा में शोध की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए उसकी प्रासंगिकता का विवेचन करना है। अध्ययन में शोध की गुणवत्ता, शोध-संस्कृति, आधारभूत सुविधाओं, , तकनीकी संसाधनों, वित्तीय सहायता तथा उद्योग एवं समाज के साथ शोध के संबंधों को प्रमुख आधार माना गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा में शोध मात्र प्रकाशन-केंद्रित न होकर, समस्या-समाधान, नवाचार और सामाजिक आकांक्षाओं तथा आवश्यकताओं से जुड़ा होता है। गुणवत्तापूर्ण शोध के लिए , पर्याप्त वित्तीय सहायता, शोध-मार्गदर्शन

आधुनिक शोध-सुविधाएँ, अंतर्विषयक दृष्टिकोण एवं अकादमिक ज्ञान एवं नैतिकता को अत्यंत सुदृढ़ रखना आवश्यक हैं।

**बीजशब्द-** उच्च शिक्षा, विकास, शोध, यूजीसी,नवाचार ,एनआरएफ।

**प्रस्तावना**- किसी भी समाज में उच्च शिक्षा एक समृद्ध, बौद्धिक, सांस्कृतिक ओर वैज्ञानिक रूप से अत्यंत ही बहुमूल्य संपदा है। यह शिक्षा ज्ञान, कौशल, नवाचार और अनुसंधान को सुव्यवस्थित, सुसंगत, सामाजोपयोगी करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है । आज प्रत्येक देश एवं समाज में उसकी अर्थव्यवस्था अत्यधिक तीव्र गति से विकसित हो रही है जिससे उसके नागरिको को वैश्विक स्तर पर समानता एवं प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने के लिए उच्च शिक्षा के द्वारा सराहनीय कार्य किए जा रहे है। इसके लिए उच्च शिक्षा संस्थान स्थानीय, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार से ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए तत्पर रहते है, जिसमे सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह संस्थान देश की आर्थिक विकास की प्रक्रिया में सीधे तौर पर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने का प्रयास करते है। एक ओर जहाँ उच्च शिक्षा किसी व्यक्ति की बौद्धिक योग्यताओं, समर्थताओं, विशेषज्ञताओं जिज्ञासाओं आदि को विकसित करती है, जिससे व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत जीवन के लक्ष्यों, आकांक्षाओं, विचारों आदि को पूर्ण करने में समर्थ हो पाता है तो दूसरी तरफ उच्च शिक्षा एक छोटे (समाज) विद्यालय अथवा कालेज की भी बौद्धिक योग्यताओं,क्षमताओं,आशाओं, समर्थताओं आदि को भी विकसित करती है और इस समूह को सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय लक्ष्यों की ओर भी प्रेरित एवं निर्देशित करने का कार्य करती है।

शोध वैज्ञानिक समुदाय के अपने विकास के लिए बहुत ही अनिवार्य होते है। शोध खोज प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से नए विषय को परिलक्षित किया जाता है। वास्तव में यह विद्यार्थियों अथवा शोधकर्ताओं को विभिन्न विषयों पर अत्यंत ही गहराई से अध्ययन एवं विचार करने तथा नवीन ज्ञान की खोज करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। शोध शिक्षा की मूलभूत भूमिका का ही एक भाग है साथ ही शोध छात्रों को स्वतंत्र निर्णय के साथ शोध विशेष क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

उच्च शिक्षा का उद्देश्य ऐसे सर्वांगीण व्यक्तित्वों का निर्माण करना है, जो न केवल बौद्धिक रूप से जिज्ञासु हो, बल्कि सामाजिक रूप से भी अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सेवा की भावना रखता हैं।

शोध मनुष्यता के विकास के इतिहास में विवेक और ज्ञान के संतुलित उपयोग तथा विभिन्न प्रकार की स्वाभाविक जिज्ञासाओं, कठिनाइयों एवं समस्याओं आदि के निवारणों का प्रयत्नशील प्रयास है ।मनुष्य के व्यवहार के तीन मुख्य भागों जिसमें प्रथम श्रेष्ठ स्थान 'ज्ञान' को फिर 'भाव' एवं तत्पश्चात 'क्रिया' को स्थान प्राप्त है। वास्तव में ज्ञान की पिपाशा को शांति प्रदान करने के लिए तथा अनेक जटिल प्रश्नों एवं समस्याओं को दूर करने के लिए ही हम शोध की तरफ उन्मुख होते हैं, जिससे ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की खोज एवं विकास पर केन्द्रित होने के लिए महत्वपूर्ण दिशा निर्देशन प्राप्त होता है।

पुरातन काल से अनेक समृद्ध संस्कृति एवं सभ्यताओं से लेकर आज नूतन सभ्यताओं तक में ऐसे ज्ञान समाज विकसित हुए हैं, जिन्होंने अपने भौतिक एवं बौद्धिक संपदा को भाषा, संस्कृति, विज्ञान ,कला आदि के प्रकाश में आधुनिक ज्ञान ग्रहण कर स्वयं एवं संपूर्ण विश्व को मार्गदर्शन एवं उत्थान प्रदान किया है। शिक्षाविद प्रोफेसर यशपाल का कथन है कि "जिन शिक्षण संस्थानों में अनुसंधान और उसके गुणवत्ता पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है वे न ही शिक्षा का भला कर पाते हैं न ही समाज का हित कर पाते हैं।"

**उच्च शिक्षा में शोध की आवश्यकता -** आज परिवर्तन के इस युग में शोध की एक अत्यधिक मजबूत परिस्थितिकी तंत्र का होना आवश्यक माना जाता है , जिसके लिए आने वाले भविष्य में सभी राष्ट्रों को अपनी अनुसंधान क्षमताओं, आकांक्षाओं एवं परिणामों में विस्तार करने का प्रयास करना होगा। उच्च शिक्षा में शोध की आवश्यकता निम्न लिखित प्रकार से है-

- उच्च शिक्षा में शोध मनुष्य के ज्ञान को दिशा प्रदान करने के साथ ही साथ ज्ञान के भंडारण को संग्रहित, परिमार्जित एवं विकसित करने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करता है
- शोध मानव के जिज्ञासा एवं मूल प्रवृत्ति को न केवल संतोष प्रदान करता है, अपितु उसे निरंतर कुछ नया सृजित करने के लिए प्रेरित भी करता रहता है।
- शोध के द्वारा मनुष्य अपने पूर्वाग्रहों के निदान एवं विभिन्न प्रकार से इसके निवारण हेतु मार्गदर्शन प्राप्त करता है।

- शोध के द्वारा मानव न केवल नई कार्यविधियों, उत्पादों ,खोजो आदि के दिशा में अग्रसर होता है, बल्कि उसके विकास में भी प्रयत्नशील रहता है।

**उच्च शिक्षा में शोध कार्यों का महत्त्व एवं प्रासंगिकता -**

उच्च शिक्षा में शोध कार्यों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है ये न केवल ज्ञान एवं बुद्धि के समुचित विकास में सहयोग करता है बल्कि छात्रों की समस्याओं के समाधान के लिए अपने कौशल और ज्ञान का उपयोग करने का अवसर भी प्रदान करता है । उच्च शिक्षा में शोध का महत्त्व एवं प्रासंगिकता निम्नलिखित प्रकार से है -

- **ज्ञान एवं बोध का विकास -** शोध का अर्थ होता है नए ज्ञान की खोज करना। अतः शोध छात्रों को नए ज्ञान की खोज एवं मौजूदा ज्ञान को समझने एवं परिमार्जित करने में सहायता प्रदान करता है।
- **नवीनता एवं नवाचार को बल देना-** शोध सदैव ही नए विचारो और ज्ञान- विज्ञान एवं तकनीकी को विकसित करने में सहयोग करता है, जो किसी राष्ट्र समाज एवं उनके अर्थव्यवस्था के लिए उपयोगी साबित होता है।
- **समस्या समाधान कौशल का विकास -**

एक शोध सदैव ही क्षेत्र विशेष की समस्याओं को दृष्टिगोचर करके एवं उसकी पहचान करने एवं उनका विश्लेषण और समाधान ढूँढने के लिए प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने का कार्य करता है।

- **शैक्षणिक एवं व्यावसायिक विकास-**

शोध सदैव ही छात्रों को शैक्षणिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में मार्गदर्शन करने का महत्वपूर्ण कार्य भी करता है ।

- **कौशल विकास-**

शोध छात्रों में विभिन्न प्रकार के कौशलों के विकास करने के लिए भी प्रयासरत रहता है।

उच्च शिक्षा इस ज्ञान द्वारा संचालित अर्थव्यवस्था में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, परंतु आज के समय में इस शिक्षा के साथ- साथ व्यावसायिक एवं पेशेवर ट्रेनिंग की मांग अत्यधिक तीव्र गति से बढ़ी हुई है। यह बात हम जितनी जल्दी समझ ले की शोध समुचित, ,निश्चित,

आकलन एवं प्राक्कलन से सुसज्जित होकर एक ऐसा वैज्ञानिक मार्ग दिखाता है जिससे देश के समेकित ढांचे को न केवल बेहद सुदृढ़ करना आसान होगा बल्कि भारत के आत्मनिर्भर बनने का दरवाजा भी यहीं से खुलेगा । किसी भी देश के विकास का संबंध वहाँ के निवासियों से अत्यंत गहरा होता है । कोई भी देश विकास के मार्ग पर तब तक आगे नहीं बढ़ सकता है, जब तक कि उसके पास उच्च शिक्षा की गुणवत्तापूर्ण व्यवस्था के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध न हो। विख्यात प्रशासनिक चिंतक पीटर ड्रकर के अनुसार "भविष्य में ज्ञान का समाज विश्व के किसी भी समाज से अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बन जाएगा। किसी देश की समृद्धि वहाँ के शिक्षा से अनुमानित किया जाएगा, लेकिन इस निरंतर बदलते विश्व में किसी देश के अनुसंधान का स्तर क्या है ? इसको आधार मानकर ही उसका आकलन किया जाएगा।"

उच्च शिक्षा और शोध को किसी राष्ट्र के विकास की रीढ कहना किसी भी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं है। किसी भी प्रकार का विनियोग वास्तव में कई जोखिमो पर आधारित होता है एवं हमें इसका परिणाम भी काफी समय के उपरान्त की ज्ञात हो पाता हैं।

विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) के वैश्विक नवाचार सूचकांक (GII) 2025 में भारत 139 अर्थव्यवस्थाओं में 38वें स्थान पर पहुँच गया है, जो वर्ष 2020 (48वाँ स्थान) की तुलना में बेहतर सुधार को दर्शाता है। शीर्ष रैंकिंग वाली अर्थव्यवस्थाओं में ,शीर्ष पाँच सबसे नवोन्मेषी अर्थव्यवस्थाएँ स्विट्जरलैंड (प्रथम), स्वीडन (द्वितीय), अमेरिका (तृतीय), दक्षिण कोरिया (चौथा) और सिंगापुर (पाँचवाँ) हैं। चीन पहली बार शीर्ष 10 में शामिल हुआ और 10वाँ स्थान हासिल किया है।

डिजिटल विकास और असंख्य सरकारी पहलो के कारण भारत में नवाचार के लिए सरकारी पहल करने वाली संस्थाएँ जैसे स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया एवं अटल नवाचार मिशन आदि ठीक ढंग से अपने कार्य को अंजाम दे पा रहे हैं। वास्तव में किसी भी प्रकार के शोध पर खर्च बढ़ना एक सामान्य आवश्यकता है क्योंकि कोई भी नवाचार एकदम से तुरंत ही प्राप्त नहीं होता है इसके लिए अत्यंत ही लगन से एवं धैर्यपूर्वक कार्य करने के साथ समय,धन तथा विभिन्न व्यक्तियों एवं सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के सहयोग और परामर्श की आवश्यकता होती है ।वर्तमान समय में भारत अपने अनुसंधान पर अपनी जीडीपी का 0. 69% मात्र ही विनियोग करता है, जबकि अमेरिका में 2.8% दक्षिण

कोरिया द्वारा 4.2% और सर्वाधिक 4.3 प्रतिशत इजरायल द्वारा खर्च किया जाता है, जिस वजह से यह देश अपने अनुसंधान और नवाचार में अव्वल होने के साथ -साथ विभिन्न प्रकार के प्रतिस्पर्धाओं में भी पश्चिम के कई देशों से आगे निकल जाते हैं। परंतु भारत जैसे देश के लिए यह विनियोग अत्यंत ही अल्प राशि माना जाता है जिसे समय-समय पर देश की आवश्यकताओं के अनुसार बढ़ाने की आवश्यकता है, जिसका लाभ हमको भविष्य में आत्मनिर्भर बनने में सहायता प्रदान करेगा।

IIT(भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान) की स्थापना भारत मे तकनीक अनुसंधान की वृद्धि एवं विकास को ध्यान में रखकर किया गया था, परंतु आज ये संस्थान केवल अमेरिकी सॉफ्टवेयर कंपनियों के लिए सस्ते व्यावसायिक आपूर्ति का कार्य संपन्न कर रहे हैं, जबकि इनकी स्थापना भारत के विकास के लिए महत्वपूर्ण तकनीकी तैयार करने एवं देश के विकास को तीव्र करके आत्मनिर्भर बनाना था ।वास्तव में यह संस्थान अपने मूलभूत उद्देश्य से ही भटक गए है ,जिसका स्पष्ट प्रभाव भारत के विकास पर पड़ रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा उच्च शिक्षा में कई परिवर्तन किए गए है, जैसे- जो छात्र अनुसंधान करना चाहते हैं, उनके लिए 4 साल का डिग्री प्रोग्राम रखा गया है, जो लोग नौकरी में जाना चाहते हैं, वे इस प्रोग्राम से 3 साल में ही डिग्री प्राप्त कर लेंगे। लेकिन जो शोध करना चाहते हैं वो 1 साल के एम0ए0 के साथ 4 साल का डिग्री प्रोग्राम करने के बाद सीधे तौर पर पीएचडी में एडमिशन ले सकते हैं एवं उन्हें एमफिल की जरूरत नहीं होगी।

उच्चतर शिक्षा से संबंधित स्वयं यूजीसी ने शोध की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए पीएचडी के लिए मास्टर डिग्री की अनिवार्यता को हटा दिया तथा साथ ही साथ नौकरीपेशा व्यक्तियों को भी पार्ट टाइम पीएचडी करने का विकल्प एक अवसर के रूप में प्रदान किया । इसके अलावा यूजीसी ने वर्ष 2017 से जुड़े नियमों को शुरू कर 10 प्रतिशत से ऊपर किसी भी प्रकार के मिलते- जुलते कंटेंट को साहित्यिक चोरी कहते हुए छात्रों को अतिरिक्त समय प्रदान कर थीसिस लिखने का पुन: विकल्प भी प्रदान किया। यूजीसी ने साहित्यिक चोरी पर विभिन्न प्रकार से रोकथाम लगाने एवं कार्रवाई करने का भी निर्णय लिया। शोध यूजीसी के उद्देश्यों का महत्वपूर्ण भाग है और यूजीसी ने शोध कार्य को विभिन्न तरीकों से बढ़ावा देने का भरसक प्रयास किया। इसने उच्च शिक्षा के नवीनतम ज्ञान एवं तकनीकी

को विनयशीलता के साथ अधुनातन स्तर तक बढ़ाने का सार्थक प्रयास किया ।यूजीसी ने छात्रों के स्वतंत्र सोच,निर्णय एवं उनके व्यक्तिगत व व्यावसायिक विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया ।यूजीसी ने शोध के लिए विभिन्न योजनाएं एवं अनुदान प्रदान करने के साथ ही साथ जूनियर रिसर्च फैलोशिप की परीक्षाएं आयोजित कर शोध एवं उच्च शिक्षा में रुचि रखने वाले छात्रों को शोध के लिए चुनने का प्रयास भी किया।

सीएसआइआर के एक सर्वे के अनुसार भारत में प्रत्येक वर्ष लगभग 300 शोध एवं शोध पत्र क्रियान्वित एवं प्रकाशित किए जाते हैं परंतु उनमें से अधिकतर में किसी भी प्रकार का नया ज्ञान अथवा विचार नहीं होता है ।संपूर्ण विश्व में शोध पत्रों के दृष्टिकोण से भी भारत का योगदान 2-3 प्रतिशत ही रहता है यह भी विदित है की विश्वविद्यालयों में सरकारी तथा प्राइवेट संस्थाओं की प्रयोगशालाओं में भी अत्यधिक अल्प खर्च किया जाता हैं, यह  विचारणीय है। ये कहाँ तक देश की सामाजिक और आर्थिक प्रगति में सहायक होंगे?

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा एवं शोध के लिये कटिबद्ध प्रयास कर रही हैं, इसने विभिन्न प्रकार से विचार करते हुए जैसे कि आज वैज्ञानिक प्रतिस्पर्धा वाले विश्व में भारत के शोध एवं विकास की समसामयिक स्थिति क्या हैं? अन्य देशों जैसे जापान, चीन, अमेरिका जैसे देशों से भारत शोध कार्यों में पीछे क्यों है? वह कौन सी बाधा है ?जो भारत के विकास के मार्ग में रुकावट बन रही है ?

इस शिक्षा नीति 2020 में भारत के संपूर्ण विकास के लिए योजनाबद्ध तरीके से अपने लक्ष्यों को हासिल करने का विचार क्रियान्वित करने का प्रयास किया हैं। इस शिक्षा नीति में भारत सरकार ने नेशनल रिसर्च फाउंडेशन को गठित किया है, जो उत्कृष्ट शोध तथा उसके निरंतरता के लिये अनुदान प्रदान करने के लिए प्रयासरत हैं साथ ही एनआरएफ की स्थापना, जो गुणवत्तायुक्त अनुसंधान को सही रूप से विकसित तथा प्रेरित करने के साथ प्रतिस्पर्धात्मक रुप से सभी बहु- विषयक क्षेत्रों में अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिये अनुदान देने के अलावा सभी सफल अनुसन्धानों को मान्यता देकर प्रासंगिक  संगठनों (निजी एवं सरकारी )  तथा उद्योगों को भी  सम्मिलित किया जाएगा ।

एनआरएफ सरकारी प्रभाव से पृथक होकर विभिन्न संस्थाओं या संगठनों के साथ अधिक कार्यान्वयन एवं दोहराव को कमतर कर चक्रमणीय शासन मंडल के द्वारा शासित होगा। एनआरएफ शोध शुरू करने की सुविधा एवं परामर्श देने के साथ सभी विषयों में प्रतिस्पर्धा व पियर रिव्यु प्रस्ताव को भी अनुदान देगा।

आज यह भी देखा जा रहा है की मंडलीकरण के इस युग में शिक्षा में मात्रात्मक रूप से वृद्धि तो हो रही है, परंतु गुणात्मक रूप से शिक्षा का स्तर निजी संस्थाओं की मनमानी, सरकारी उपेक्षा, संसाधनों की आपूर्ति में कमी, धन की कमी, शिक्षा का रोजगारपरक होना आदि कारणों से गिरा है, जिसके कारण वह अपेक्षित प्रगति नहीं हो पा रही है जो शुरू मे दृष्टिगोचर हुई थी। कुछ विशेष क्षेत्रों को छोड़कर वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति इतनी मजबूत नहीं है की जिसके आधार पर हम अपनी दावेदारी प्रस्तुत कर सकें ।

**निष्कर्ष-**

आज के समय में भारत सरकार के समर्थन एवं सहयोग से शिक्षा, स्वास्थ्य, अंतरिक्ष अनुसंधान, विनिर्माण, कृषि, जैविक ऊर्जा,एवं जल तकनीकी, नाभिकीय उर्जा के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी पर्याप्त विनिवेश किया जा रहा है। जिससे भारत के आत्मनिर्भर बनने की दिशा में हम निरंतर अग्रसर हो रहे हैं, परंतु अब भी कुछ ऐसी बाधाएं हैं जो राष्ट्र के विकास को अवरुद्ध करने के लिए प्रयासरत हैं। भारत में अधिकांश अनुसन्धानों में अनु अथवा रि(पुनः)पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया जा रहा है। शोध में रचनात्मकता कहीं दिखाई ही नहीं पड़ती है साथ ही साथ शोध में ज्ञान का प्रभाव शोध रचनात्मकता की ओर न होकर शिक्षण से शोध की ओर किया जाना शैक्षणिक संस्थाओं के संकीर्ण सोच को प्रदर्शित कर रहा है। शोध में सम्प्रेषण को ऐसा स्वभाव प्रदान किया गया है कि वह एक विशेष वर्ग व भाषा में ही प्रतिपादित किया जाता है। जिससे आम आदमी इसे आसानी से नहीं समझ सकता है, जिससे ज्ञान का प्रसारण उचित तरीके से नही हो रहा है भारत को ज्ञान समाज बनाने की दिशा में एक गंभीर बाधा है। किसी भी शोध का लाभ अनुसंधान से जुड़े लोगों के एक बड़े वर्ग एवं समाज को प्राप्त न हो तो इस प्रकार के शोध की उपयोगिता को क्या समझा जाए। इसलिए यह आवश्यक है कि शोध की बुनियादी सुविधाओं का ध्यान रखते हुए ऐसे व्यक्तियों का भी चुनाव किया जाए, जो शोध में अभिरुचि रखते हो।

**संदर्भ ग्रंथ सूची-**

1.गुप्ता ,एस0पी0 .(2020) अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रतयय,कार्यविधि एवं प्रविधि, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन,पृष्ठ संख्या 1-22

2.त्रिवेदी आर0एन0, डी0पी0 शुक्ला,रिसर्च मेथोडोलॉजी जयपुर: कालेज बुक डिपो

3.सिंह, अरुण कुमार (2005). मनोविज्ञान,समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास

4 गुप्ता, एस0पी0, अलका गुप्ता(2020).भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन  पृष्ठ सं0 734-786

Websites-

1.https//:www.jagaran.com

2.https://www.jansatta.ww.

3.https://wwwwresearchgate.net

4.https://www.hansshodhsudha.com

5.https://www.ugc.gov.in

6.https://www.indiascienceandtechnology.gov.in

7. https://www.drishtiias.